कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान

सतत् प्रगति के पथ पर.....

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय

बीकानेर-334006 (राज.)

+91-151-2252981/82

director@iabmbikaner.org www.iabmbikaner.org

उद्धरण

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान- सतत् प्रगति के पथ पर .....

2019

परिकल्पना एवं मार्गदर्शन

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रकाशक

डॉ. एन. के. शर्मा

निदेशक

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

सहयोगकर्ता

डॉ. विक्रम योगी (सहायक प्राध्यापक)

श्री अभिनव गौतम (वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता)

श्री शुभओम पंडा (वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता)

डिजाइन एण्ड प्रिंटिंग

किशन एन्टरप्राइजेज,

बीकानेर

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा
कुलपति

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

Phone : 0151-2250443, 2250488 (O)
: 0151 : 2250469, 2250529 (R)
Fax : 0151 : 2250336
email : vcrau@raubikaner.org

स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
बीकानेर–334006 (राज.)

संदेश

परम्परागत कृषि पद्धति तेजी से आधुनिक कृषि पद्धति में परिवर्तित होकर कृषि व्यवसाय का रूप ले रही है। वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन व तकनीकी प्रगति के कारण फसलों के प्रारूप व फसल पद्धति में बदलाव देखा जा रहा है। लोगों की जीवन शैली एवं आहार पद्धति भी बदल रही है। पारंपरिक भोजन फास्ट फूड में परिवर्तित हो रहा है। मौजुदा मानव स्वास्थ्य समस्याओं जैसे मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप इत्यादि के कारण लोग स्वास्थ्य के प्रति सचेत हो रहे हैं जिसके कारण गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादों, फलों और सब्जियों की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। वैश्विक स्तर पर बाजार की मांग में तेजी से बदलाव देखा जा रहा है। इसलिए स्थानीय व क्षेत्रीय व्यावसायिक मॉडल, वैश्विक व्यापार मॉडल में परिवर्तित हो रहे हैं। जिसके कारण कृषि के क्षेत्र में व्यवसाय की व्यापक संभावनाएं उत्पन्न हो रही है।

कृषि आदानों का उत्पादन एवं आपूर्ति जैसे बीज व रोपण सामग्री, उर्वरक व कृषि रसायन, कृषि यंत्रों का निर्माण एवं विपणन और कुशल सिंचाई आदि के साथ–साथ कृषि व पशुधन उत्पादन, सुरक्षित भण्डारण, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, मूल्य संवर्धन, वितरण एवं विपणन आदि कृषि व्यवसाय में शामिल होने वाले सभी प्रतिष्ठान हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर कॉरपोरेट एवं गैर–कॉरपोरेट संगठनों के लिए आधुनिक प्रबन्धन से सुसज्जित, योग्य कृषि व्यवसाय पेशेवरों को प्रशिक्षित एवं विकसित कर रहा है। संस्थान का कॉरपोरेट एवं गैर–कॉरपोरेट क्षेत्रों में विद्यार्थियों के शत्–प्रतिशत प्लेसमेंट का ट्रेक रिकॉर्ड है। इस प्रतिष्ठित संस्थान के पूर्व विद्यार्थी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि व्यवसाय और सम्बन्धित क्षेत्रों की उन्नति और विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। मैं भविष्य में इस संस्थान की उन्नति एवं प्रगति के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

जून 10, 2019

(विष्णु शर्मा)
कुलपति

डॉ. एन. के. शर्मा
निदेशक

Phone : 0151-2252981/82
Fax : 0151-2250336
email : director@iabmbikaner.org

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान
स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय,
बीकानेर-334006 (राज.)

निदेशक की कलम से .....

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का लगभग 18 प्रतिशत योगदान है। कृषि क्षेत्र देश की करीब 55 प्रतिशत आबादी को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। भारत दुनिया में दाल, चावल, गेहूं और मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर है। वर्ष 2017–18 के दौरान भारत ने तकनीकी हस्तक्षेप, किसानों की कड़ी मेहनत, सरकार की समर्थन नीति एवं मौसम के अनुकूलता के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन (284.83 मिलियन मीट्रिक टन), बागवानी उत्पादन (307.16 मिलियन मीट्रिक टन), दूध (165.40 मिलियन मीट्रिक टन), शहद उत्पादन (105 मीट्रिक टन) और मांस उत्पादन (7.40 मिलियन मीट्रिक टन) में अभूतपूर्व वृद्धि हासिल की है। वर्तमान में भारत लगभग 20 मिलियन मीट्रिक टन खाद्यान्न निर्यात करने में सक्षम है।

कृषि व्यवसाय के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपार सम्भावनाएं बहुत तेजी से उभर रही है। देश में विविध कृषि व्यवसाय क्षेत्र के महत्व को समझते हुए कई कृषि विश्वविद्यालयों ने कृषि–उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप मानव संसाधन विकसित करने के लिए कृषि व्यवसाय शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया है। खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता के बाद भारत सरकार का ध्यान उत्पादन से आय सृजन तथा खाद्य सुरक्षा से पोषण सुरक्षा की ओर केन्द्रित हो रहा है। देश में हरित, श्वेत, पीली, नीली व मधु क्रान्तियों के बाद अब किसानों के लिए आय क्रांति लाने की आवश्यकता है जो केवल अनुसंधान संचालित उत्पादन एवं उत्पादन के बाद की मूल्य संवर्धित तकनीकी आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से संभव है।

तदनुसार, हमें कृषि को लाभकारी व किसान की आय बढ़ाने के लिए सभी प्रयास कर भारतीय कृषि के परिवर्तन के लिए अपनी रणनीति को परिवर्तित करना होगा। हमें अपने फसल प्रजनन कार्यक्रम का आधुनिकीकरण करना होगा तथा ग्रामीण स्तर पर किसान सहभागिता बीज उत्पादन कार्यक्रम को मजबूत कर किसानों को जलवायवीय तन्यक किस्में समय पर उपलब्ध करानी होगी। फलों और सब्जियों के मामले में, कृषि उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप किस्मों को विकसित कर उनकी खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। किसानों की आय बढ़ाने के लिए प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और बाजार सम्पर्क को बढ़ावा देने हेतु अधिक से अधिक किसान उत्पादक संगठनों का गठन किया जाना है। वर्तमान स्थिति में जब किसान स्मार्ट मोबाइल का उपयोग कर रहे हैं, हमारी वेबसाइटों को किसान के अनुकूल होना चाहिए और बीज व रोपण सामग्री की उपलब्धता सहित सभी आवश्यक तकनीकी जानकारियों के साथ अद्यतन होना चाहिए। विश्वविद्यालय / संस्थान द्वारा विकसित किस्मों, फसल उत्पादन एवं पादप संरक्षण प्रौद्योगिकियों का विवरण भी वेबसाईट पर उपलब्ध होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि क्षेत्र में आ रही समस्याओं का सामना करने व जोखिम कम करने के लिए कृषि जलवायवीय परिस्थितियों के अनुरूप विशिष्ट एकीकृत कृषि प्रणाली मॉड्यूल को विकसित कर बढ़ावा देना होगा।

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान वर्ष 2000 से कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों की मांग के अनुसार वांछित तकनीकी व प्रबंधकीय कौशल के साथ योग्य मानव संसाधन विकसित कर देश में कृषि क्षेत्र की प्रगति एवं विकास में व्यापक योगदान दे रहा है। मैं संस्थान के सभी शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को उनके सहयोग व योगदान के लिए धन्यवाद देता हूँ व आशा करता हूँ कि भविष्य में यह संस्थान कृषि व्यवसाय की प्रगति में मील का पत्थर साबित होगा।

जून 10, 2019

(एन.के.शर्मा)
निदेशक

विश्वविद्यालय परिचय

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संचालित कृषि संकाय को पृथक कर राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक पं. 5(14) कृषि/ग्रुप/87 दिनांक 31–07–1987 द्वारा बीकानेर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, परिणामस्वरूप दिनांक 01 अगस्त,1987 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। यह राजस्थान प्रदेश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था, जिसका अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान था। तत्पश्चात् वर्ष 1999–2000 में राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 3 (12) कृषि/ग्रुप–2/98 दिनांक 01–11–1999 के द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से पृथक कर उदयपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, यह राजस्थान राज्य का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय था, जिसके अधिकार क्षेत्र में उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी एवं सिरोही जिले दिये गये। वर्ष 1999 में कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर स्थापित होने के पश्चात् राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जयपुर, चूरू, झुंझूनु, सीकर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जालौर, अलवर, धौलपुर, टोंक एवं करौली जिले रह गये। तत्पश्चात् वर्ष 2009 में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (नाम परिवर्तन) अध्यादेश, 2009 के द्वारा दिनांक 09–06–2009 से राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का नाम परिवर्तन कर स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर रखा गया। वर्ष 2010 में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत संचालित पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय को पृथक कर बीकानेर में राज्य के प्रथम पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक 2 (25) ए.एच./2009 दिनांक 13–05–2010 द्वारा की गई। वर्ष 2013 में राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना क्रमांक प. 4 (18) कृषि/ग्रुप–3/2013 दिनांक 14–09–2013 के द्वारा प्रदेश में तीन नये कृषि विश्वविद्यालय क्रमशः जोबनेर–जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में स्थापित किये गए। जिसके उपरान्त स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, चूरू एवं झुंझुनू जिले हैं।

विश्वविद्यालय व्यापक अर्थों में राज्य के कृषि विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी बहुआयामी गतिविधियां तीन महाविद्यालयों (कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय व कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान), दो कृषि अनुसंधान केन्द्रों (बीकानेर व श्रीगंगानगर) व कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र (हनुमानगढ़) के माध्यम से संचालित की जा रही है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय बीज परियोजना इकाई भी कार्यरत है जिसके माध्यम से प्रजनक व सत्य चिन्हित बीज पैदाकर विश्वविद्यालय द्वारा बीज उत्पादक संस्थाओं व किसानों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियां सात कृषि विज्ञान केन्द्रों व मुख्यालय पर स्थित कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र के माध्यम से संचालित की जा रही है।

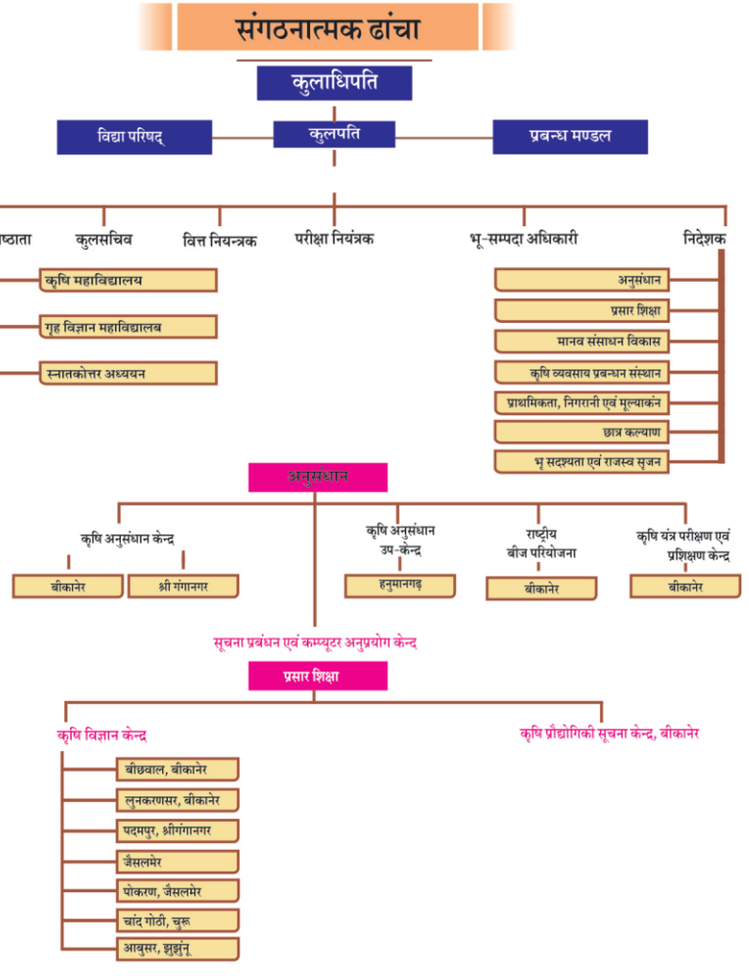

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संचालित कृषि संकाय को पृथक कर राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक पं. 5(14) कृषि/ग्रुप/87 दिनांक 31–07–1987 द्वारा बीकानेर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, परिणामस्वरूप दिनांक 01 अगस्त,1987 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। यह राजस्थान प्रदेश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था, जिसका अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान था। तत्पश्चात् वर्ष 1999–2000 में राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 3 (12) कृषि/ग्रुप–2/98 दिनांक 01–11–1999 के द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से पृथक कर उदयपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, यह राजस्थान राज्य का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय था, जिसके अधिकार क्षेत्र में उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी एवं सिरोही जिले दिये गये। वर्ष 1999 में कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर स्थापित होने के पश्चात् राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जयपुर, चूरू, झुंझूनु, सीकर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जालौर, अलवर, धौलपुर, टोंक एवं करौली जिले रह गये। तत्पश्चात् वर्ष 2009 में

संस्थान का संरचनात्मक ढांचा

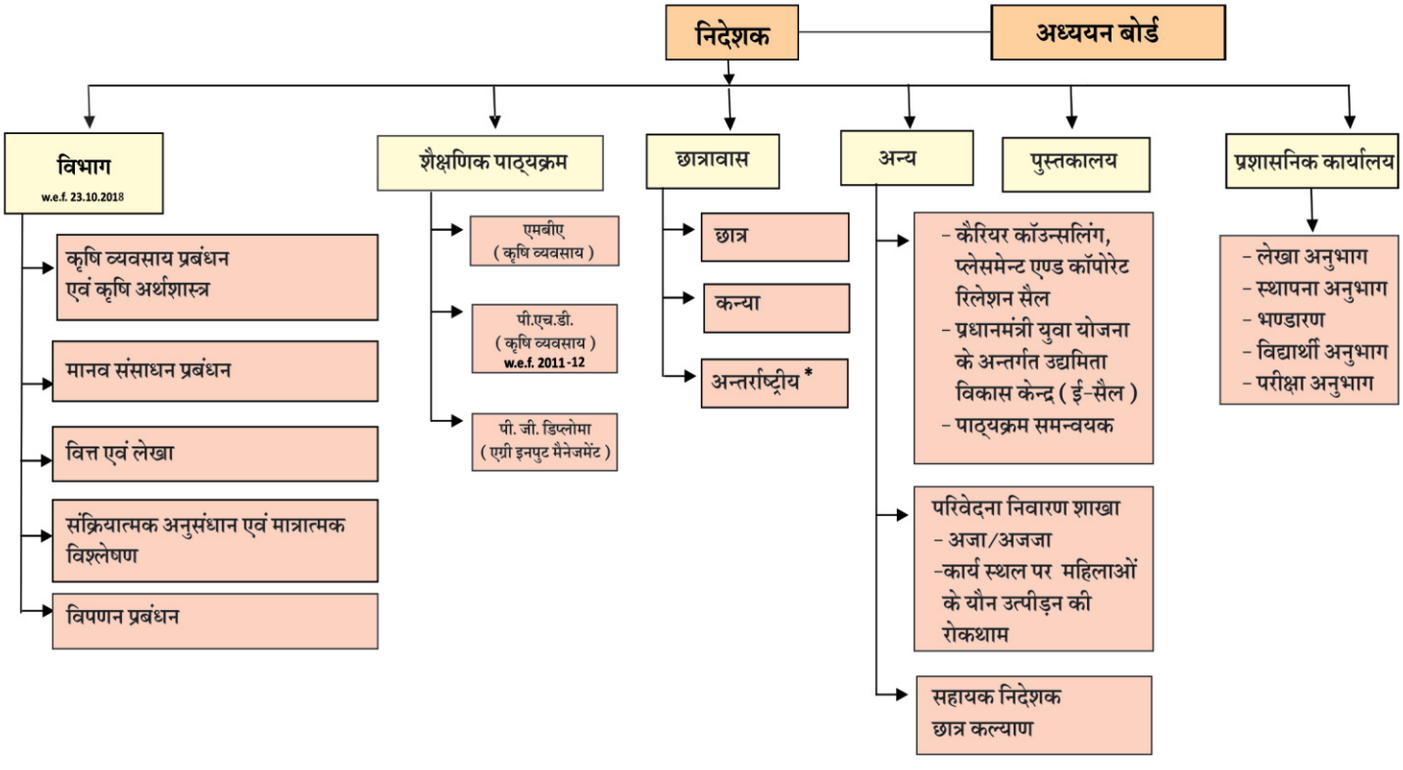

राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (नाम परिवर्तन) अध्यादेश, 2009 के द्वारा दिनांक 09–06–2009 से राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का नाम परिवर्तन कर स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर रखा गया। वर्ष 2010 में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत संचालित पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संचालित कृषि संकाय को पृथक कर राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक पं. 5(14) कृषि/ग्रुप/87 दिनांक 31–07–1987 द्वारा बीकानेर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, परिणामस्वरूप दिनांक 01 अगस्त,1987 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। यह राजस्थान प्रदेश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था, जिसका अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान था। तत्पश्चात् वर्ष 1999–2000 में राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 3 (12) कृषि/ग्रुप–2/98 दिनांक 01–11–1999 के द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से पृथक कर उदयपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, यह राजस्थान राज्य का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय था, जिसके अधिकार क्षेत्र में उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी एवं सिरोही जिले दिये गये। वर्ष 1999 में कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर स्थापित होने के पश्चात् राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जयपुर, चूरू, झुंझूनु, सीकर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जालौर, अलवर, धौलपुर, टोंक एवं करौली जिले रह गये। तत्पश्चात् वर्ष 2009 में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (नाम परिवर्तन) अध्यादेश, 2009 के द्वारा दिनांक 09–06–2009 से राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का नाम परिवर्तन कर स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर रखा गया। वर्ष 2010 में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत संचालित पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय को पृथक कर बीकानेर में राज्य के प्रथम पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक 2 (25) ए.एच./2009

दिनांक 13–05–2010 द्वारा की गई। वर्ष 2013 में राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना क्रमांक प. 4 (18) कृषि/ग्रुप–3/2013 दिनांक 14–09–2013 के द्वारा प्रदेश में तीन नये कृषि विश्वविद्यालय क्रमशः जोबनेर–जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में स्थापित किये गए। जिसके उपरान्त स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, चूरू एवं झुंझुनू जिले हैं।

विश्वविद्यालय व्यापक अर्थों में राज्य के कृषि विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी बहुआयामी गतिविधियां तीन महाविद्यालयों (कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय व कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान), दो कृषि अनुसंधान केन्द्रों (बीकानेर व श्रीगंगानगर) व कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र (हनुमानगढ़) के माध्यम से संचालित की जा रही है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय बीज परियोजना इकाई भी कार्यरत है जिसके माध्यम से प्रजनक व सत्य चिन्हित बीज पैदाकर विश्वविद्यालय द्वारा बीज उत्पादक संस्थाओं व किसानों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियां सात कृषि विज्ञान केन्द्रों व मुख्यालय पर स्थित कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र के माध्यम से संचालित की जा रही है।

कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान - एक नज़र में

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि क्षेत्र के विकास के साथ–साथ कृषि व्यवसाय पेशेवरों की आवश्यकता दिन–प्रतिदिन बढ़ रही

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संचालित कृषि संकाय को पृथक कर राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक पं. 5(14) कृषि/ग्रुप/87 दिनांक 31–07–1987 द्वारा बीकानेर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, परिणामस्वरूप दिनांक 01 अगस्त,1987 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। यह राजस्थान प्रदेश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था, जिसका अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान था। तत्पश्चात् वर्ष 1999–2000 में राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 3 (12) कृषि/ग्रुप–2/98 दिनांक 01–11–1999 के द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से पृथक कर उदयपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, यह राजस्थान राज्य का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय था, जिसके अधिकार क्षेत्र में उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी एवं सिरोही जिले दिये गये। वर्ष 1999 में कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर स्थापित होने के पश्चात् राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जयपुर, चूरू, झुंझूनु, सीकर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जालौर, अलवर, धौलपुर, टोंक एवं करौली जिले रह गये। तत्पश्चात् वर्ष 2009 में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (नाम परिवर्तन) अध्यादेश, 2009 के द्वारा दिनांक 09–06–2009 से राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का नाम परिवर्तन कर स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर रखा गया। वर्ष 2010 में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत संचालित पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय को पृथक कर बीकानेर में राज्य के प्रथम पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक 2 (25) ए.एच./2009 दिनांक 13–05–2010 द्वारा की गई। वर्ष 2013 में राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना क्रमांक प. 4 (18) कृषि/ग्रुप–3/2013 दिनांक 14–09–2013 के द्वारा प्रदेश में तीन नये कृषि विश्वविद्यालय क्रमशः जोबनेर–जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में स्थापित किये गए। जिसके उपरान्त स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, चूरू एवं झुंझुनू जिले हैं।

विश्वविद्यालय व्यापक अर्थों में राज्य के कृषि विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी बहुआयामी गतिविधियां तीन महाविद्यालयों (कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय व कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान), दो कृषि अनुसंधान केन्द्रों (बीकानेर व श्रीगंगानगर) व कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र (हनुमानगढ़) के माध्यम से संचालित की जा रही है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय बीज परियोजना इकाई भी कार्यरत है जिसके माध्यम से प्रजनक व सत्य चिन्हित बीज पैदाकर विश्वविद्यालय द्वारा बीज उत्पादक संस्थाओं व किसानों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियां सात कृषि विज्ञान केन्द्रों व मुख्यालय पर स्थित कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र के माध्यम से संचालित की जा रही है।

कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान - एक नज़र में

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि क्षेत्र के विकास के साथ–साथ कृषि व्यवसाय पेशेवरों की आवश्यकता दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। उन्नत किस्मों व आधुनिक फसल प्रबन्धन तकनीकों के उपयोग से कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। कृषि को स्थायित्व प्रदान करने व लाभकारी बनाने हेतु विशिष्ठ फसल उत्पादन, कटाई के बाद उचित प्रबन्धन, कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन यथोचित विपणन आवश्यक है।

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, बीकानेर की स्थापना 19 जनवरी, 2000 को विश्व बैंक की वित्तीय सहायता के द्वारा कृषि आधारित प्रबन्धन शिक्षा के लिए स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की घटक इकाई के रूप में की गई थी। यह संस्थान एम.बी.ए. (कृषि व्यवसाय), पी.एच.डी. (कृषि व्यवसाय) एवं एग्री इनपुट मैनेजमेंट पी.जी. डिप्लोमा में शिक्षा प्रदान करता है जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त है व अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली से भी अनुमोदित है। कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, बीकानेर को वर्ष 2013 में कृषि व्यवसाय शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट पाठ्यक्रम प्रदान

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संचालित कृषि संकाय को पृथक कर राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक पं. 5(14) कृषि/ग्रुप/87 दिनांक 31–07–1987 द्वारा बीकानेर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, परिणामस्वरूप दिनांक 01 अगस्त,1987 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। यह राजस्थान प्रदेश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था, जिसका अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान था। तत्पश्चात् वर्ष 1999–2000 में राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 3 (12) कृषि/ग्रुप–2/98 दिनांक 01–11–1999 के द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से पृथक कर उदयपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, यह राजस्थान राज्य का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय था, जिसके अधिकार क्षेत्र में उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी एवं सिरोही जिले दिये गये। वर्ष 1999 में कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर स्थापित होने के पश्चात् राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जयपुर, चूरू, झुंझूनु, सीकर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जालौर, अलवर, धौलपुर, टोंक एवं करौली जिले रह गये। तत्पश्चात् वर्ष 2009 में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (नाम परिवर्तन) अध्यादेश, 2009 के द्वारा दिनांक 09–06–2009 से राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का नाम परिवर्तन कर स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर रखा गया। वर्ष 2010 में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत संचालित पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय को पृथक कर बीकानेर में राज्य के प्रथम पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक 2 (25) ए.एच./2009 दिनांक 13–05–2010 द्वारा की गई। वर्ष 2013 में राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना क्रमांक प. 4 (18) कृषि/ग्रुप–3/2013 दिनांक 14–09–2013 के द्वारा प्रदेश में तीन नये कृषि विश्वविद्यालय क्रमशः जोबनेर–जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में स्थापित किये गए। जिसके उपरान्त स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, चूरू एवं झुंझुनू जिले हैं।

विश्वविद्यालय व्यापक अर्थों में राज्य के कृषि विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी बहुआयामी गतिविधियां तीन महाविद्यालयों (कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय व कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान), दो कृषि अनुसंधान केन्द्रों (बीकानेर व श्रीगंगानगर) व कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र (हनुमानगढ़) के माध्यम से संचालित की जा रही है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय बीज परियोजना इकाई भी कार्यरत है जिसके माध्यम से प्रजनक व सत्य चिन्हित बीज पैदाकर विश्वविद्यालय द्वारा बीज उत्पादक संस्थाओं व किसानों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियां सात कृषि विज्ञान केन्द्रों व मुख्यालय पर स्थित कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र के माध्यम से संचालित की जा रही है।

कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान - एक नज़र में

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि क्षेत्र के विकास के साथ–साथ कृषि व्यवसाय पेशेवरों की आवश्यकता दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। उन्नत किस्मों व आधुनिक फसल प्रबन्धन तकनीकों के उपयोग से कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। कृषि को स्थायित्व प्रदान करने व लाभकारी बनाने हेतु विशिष्ठ फसल उत्पादन, कटाई के बाद उचित प्रबन्धन, कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन यथोचित विपणन आवश्यक है।

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, बीकानेर की स्थापना 19 जनवरी, 2000 को विश्व बैंक की वित्तीय सहायता के द्वारा कृषि आधारित प्रबन्धन शिक्षा के लिए स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की घटक इकाई के रूप में की गई थी। यह संस्थान एम.बी.ए. (कृषि व्यवसाय), पी.एच.डी. (कृषि व्यवसाय) एवं एग्री इनपुट मैनेजमेंट पी.जी. डिप्लोमा में शिक्षा प्रदान करता है जो भारतीय कृषि

मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में संचालित कृषि संकाय को पृथक कर राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक पं. 5(14) कृषि/ग्रुप/87 दिनांक 31–07–1987 द्वारा बीकानेर में राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, परिणामस्वरूप दिनांक 01 अगस्त,1987 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। यह राजस्थान प्रदेश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था, जिसका अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान था। तत्पश्चात् वर्ष 1999–2000 में राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक प. 3 (12) कृषि/ग्रुप–2/98 दिनांक 01–11–1999 के द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से पृथक कर उदयपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, यह राजस्थान राज्य का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय था, जिसके अधिकार क्षेत्र में उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी एवं सिरोही जिले दिये गये। वर्ष 1999 में कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर स्थापित होने के पश्चात् राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जयपुर, चूरू, झुंझूनु, सीकर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जालौर, अलवर, धौलपुर, टोंक एवं करौली जिले रह गये। तत्पश्चात् वर्ष 2009 में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (नाम परिवर्तन) अध्यादेश, 2009 के द्वारा दिनांक 09–06–2009 से राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर का नाम परिवर्तन कर स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर रखा गया। वर्ष 2010 में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत संचालित पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय को पृथक कर बीकानेर में राज्य के प्रथम पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की अधिसूचना क्रमांक 2 (25) ए.एच./2009 दिनांक 13–05–2010 द्वारा की गई। वर्ष 2013 में राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना क्रमांक प. 4 (18) कृषि/ग्रुप–3/2013 दिनांक 14–09–2013 के द्वारा प्रदेश में तीन नये कृषि विश्वविद्यालय क्रमशः जोबनेर–जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में स्थापित किये गए। जिसके उपरान्त स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, चूरू एवं झुंझुनू जिले हैं। विश्वविद्यालय व्यापक अर्थों में राज्य के कृषि विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी बहुआयामी गतिविधियां तीन महाविद्यालयों (कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय व कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान), दो कृषि अनुसंधान केन्द्रों (बीकानेर

संस्थान के एमबीए (कृषि व्यवसाय) स्वर्ण पदक विजेता

क्र.सं.	विद्यार्थी का नाम	वर्ष
1	सुश्री अल्का स्वामी	2002
2	श्री प्रवीण सिंह चंबियाल	
3	सुश्री मल्लिका चौधरी	
4	श्री सुधीर शर्मा	2003
5	श्री अमित कुमार ठाकुर	2004
6	सुश्री रूचि शेखावत	2005
7	श्री अनिल कुमार	
8	सुश्री प्रियंका सोलंकी	
9	श्री धीरज कुमार सिंह	2006
10	श्री निशांत मोदगिल	2007
11	सुश्री आकृति शर्मा	2008
12	श्री दीपक कुमार बंसल	2009
13	श्री हर्षित चित्तौड़ा	2010
14	सुश्री दीप्ति महाजन	2011
15	सुश्री अल्का कुमारी	2012
16	श्री मनमोहन सिंह	2013
17	श्री चंद्रमौली सिंह	2014
18	सुश्री सोनाली चौहान	2015
19	श्री कुमार आदित्य	2016
20	श्री प्रदीप	2017
21	सुश्री कविता देवी	2018

संचालित
घना क्रमांक
रा बीकानेर
की गई,
स्थान कृषि
श का प्रथम
ी राजस्थान
रकार की
98 दिनांक
य, बीकानेर
त किया गय
वाड़ा, राजस
पित होने के
इमेर, जोधपु
टोंक एवं कर
रिवर्तन) अध्या
ी केशवानन्द
कानेर के अंत
ज्ञान विश्वविद
ाई। वर्ष 2
रा प्रदेश में

संस्थान के पीएच.डी. (कृषि व्यवसाय) उपाधि प्राप्त विद्यार्थी

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधिकार क्षेत्र में बीकानेर,

क्र.स.	विद्यार्थी	वर्ष	मुख्य सलाहकार	शोध शीर्षक
1	श्री रिचर्ड क्वासी बन्नोर	2015	डॉ. मधु शर्मा	राजस्थान में किन्नू का विपणन
2	श्री जोसेफ लोंगो	2015	डॉ. राजेश शर्मा	राजस्थान के अजमेर जिले में खेत स्तर पर कुकुट दाना निरूपण
3	श्री श्रीकांत शर्मा	2016	डॉ. राजेश शर्मा	कृषि विपणन निर्णयों को प्रभावित करने में विचारवान नेतृत्व
4	श्री अविनाश वानम	2016	डॉ. राजेश शर्मा	सब्जियों में वैकल्पिक विपणन प्रणाली की आपूर्ति श्रृंखला और विपणन क्षमता
5	सुश्री स्वाति उत्रेजा	2017	डॉ. मधु शर्मा	कृषि आगत खुदरा व्यापार में ब्रॉड वफादारी : बीकानेर जिले के कृषकों का एक अध्ययन
6	श्री सुरजीत सिंह ढाका	2017	डॉ. मधु शर्मा	भारत में कृषि आदानों का ऑनलाइन खुदरा व्यापार
7	सुश्री जॉली मसीह	2017	डॉ. अमिता शर्मा	भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में ग्लूटेन रहित उत्पादों के वैश्विक ब्रांडो के लिये उत्पाद वर्गीकरण और वितरण मिश्रण
8	सुश्री प्रियंका सोलंकी	2017	डॉ. मधु शर्मा	राजस्थान की प्रमुख फसलों के लिए चुने हुए मूल्य पूर्वानुमान मॉडल
9	श्री मोहित शर्मा	2017	डॉ. अदिति माथुर	उत्तम कृषि पद्धतियों के साथ भारतीय आम का निर्यात : चुनौतियां और संभावनाएं
10	श्री गुरबीर सिंह	2018	डॉ. अमिता शर्मा	राजस्थान में ऊंटनी के दूध का उद्यमिता विकास मॉडल

विभाग एवं संकाय

संस्थान व इसके शैक्षणिक कार्यक्रमों की उन्नति एवं विकास के लिए अक्टूबर 2018 में कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान में पांच विभागों का गठन किया गया। भविष्य में इन विभागों को श्रम शक्ति द्वारा प्रबल बनाकर संस्थान की उन्नति के लिए नये कार्यक्रमों का समावेश किया जायेगा।

संकाय

संस्थान के शिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम का नियमित संकायों के साथ–साथ विश्वविद्यालय के विभिन्न घटक इकाइयों में कार्यरत संकायों, अन्य संगठनों से अंशकालिक संकाय एवं शिक्षण सहायक के रूप में संस्थान के विद्यावाचस्पति के विद्यार्थियों द्वारा समर्थित किया जाता है।

कृषि और कृषि व्यवसाय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान देने के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों, सरकारी अधिकारियों, उद्यमियों आदि को नियमित रूप से आमंत्रित किया जाता है।

वर्तमान में संस्थान में प्रमुख सलाहकार के रूप में विद्यार्थियों के शिक्षण और मार्गदर्शन में लगे संस्थान एवं अन्य घटक इकाईयों के संकाय निम्नानुसार हैः

संस्थान के विभागवार नियमित संकाय

क्र.सं.	विभाग	नियमित संकाय
1	कृषि व्यवसाय प्रबंधन एवं कृषि अर्थशास्त्र विभाग	डॉ. विक्रम योगी, सहायक प्रोफ़ेसर (कृषि अर्थशास्त्र)
2	मानव संसाधन प्रबंधन विभाग	डॉ. अदिति माथुर, सहायक प्रोफ़ेसर (मानव संसाधन प्रबंधन)
3	वित्त एवं लेखा विभाग	डॉ. एस.एस. मीणा, सहायक प्रोफ़ेसर (वित्त)
4	संक्रियात्मक अनुसंधान एवं मात्रात्मक विश्लेषण विभाग	डॉ. अमिता शर्मा, सहायक प्रोफ़ेसर (परिणात्मक प्रबन्धन तकनीकें)
5	विपणन प्रबंधन विभाग	श्री विवेक व्यास, सहायक प्रोफ़ेसर (विपणन)

विश्वविद्यालय की अन्य घटक इकाइयों से संबंधित संकाय सदस्य

विश्वविद्यालय के अन्य घटक इकाइयों से निम्नलिखित संकाय सदस्य वर्तमान में कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान में विद्यार्थियों के शिक्षण और मार्गदर्शन में कार्य कर रहे हैं।

क्र.स.	संकाय	पदनाम	घटक इकाई
1	डॉ. आई. पी. सिंह	प्रोफ़ेसर (कृषि अर्थशास्त्र) एवं अधिष्ठाता	कृषि महाविद्यालय, बीकानेर
2	डॉ. राजेश शर्मा	प्रोफ़ेसर (कृषि अर्थशास्त्र)	कृषि महाविद्यालय, बीकानेर
3	डॉ. मधु शर्मा	प्रोफ़ेसर (कृषि अर्थशास्त्र)	कृषि महाविद्यालय, बीकानेर
4	डॉ. एस. के. शर्मा	प्रोफ़ेसर (प्रसार शिक्षा) एवं निदेशक	प्रसार शिक्षा निदेशालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
5	डॉ. आर. एस. यादव	प्रोफेसर (शस्य विज्ञान) एवं निदेशक	मानव संसाधन विकास निदेशालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

6	डॉ. मीनाक्षी चौधरी	प्रोफ़ेसर (प्रसार शिक्षा–गृह विज्ञान) एवं निदेशक	प्राथमिकता निगरानी एवं मूल्याकंन निदेशालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
7	डॉ. वीर सिंह यादव	प्रोफेसर (कीट विज्ञान) एवं निदेशक	छात्र कल्याण निदेशालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
8	डॉ. सी. पी. राजपुरोहित	पुस्तकालयाध्यक्ष	केन्द्रीय पुस्तकालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
9	डॉ. शिरीष शर्मा	सहायक प्रोफ़ेसर (कृषि अर्थशास्त्र)	कृषि महाविद्यालय, बीकानेर
10	इंजी. ए. के. सिंह	सह प्रोफ़ेसर (कृषि अभियान्त्रिकी)	कृषि अनुसन्धान केन्द्र, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
11	डॉ. सीमा त्यागी	सहायक प्रोफ़ेसर (प्रसार शिक्षा–गृह विज्ञान)	प्राथमिकता निगरानी एवं मूल्याकंन निदेशालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
12	डॉ. सुशील कुमार	सहायक प्रोफ़ेसर (बागवानी)	कृषि विज्ञान केन्द्र, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

अन्य संस्थानों के अतिथि संकाय

अन्य संस्थानों के निम्नलिखित शिक्षक भी चयनित विषयों को पढ़ाने के लिए अतिथि संकाय के रूप में कार्यरत हैं।

क्र.सं.	संकाय	पदनाम	सम्बन्धित संस्था
1	डॉ. अल्का स्वामी	सहायक प्रोफेसर (प्रबन्धन)	राजकीय अभियान्त्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, बीकानेर
2	सुश्री अस्मिता सिंह	अतिथि संकाय (कम्प्यूटर विज्ञान)	राजकीय अभियान्त्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, बीकानेर
3	सुश्री पूजा राखेचा	सहायक प्रोफेसर (प्रबन्धन)	प्रबन्धन अध्ययन संस्थान, बीकानेर
4	श्री जितेन्द्र चौहान	प्रबंध निदेशक	इनोस्क्यूलेशन हब प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली
5	डॉ. विजय शर्मा	सहायक प्रोफेसर (प्रबन्धन)	अभियान्त्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर
6	श्री मनीष तंवर	सहायक प्रोफेसर (प्रबन्धन)	प्रबंधन अध्ययन संस्थान, बीकानेर
7	श्री पल्लव गोस्वामी	अतिथि संकाय	निजी क्षेत्र के बैंक में कार्यरत, बीकानेर

अतिथि व्याख्यान

विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन एवं प्रोत्साहन हेतु मार्गदर्शक के रूप में कृषि एवं कृषि व्यवसाय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान देने के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों, सरकारी अधिकारियों, उद्यमियों आदि को साप्ताहिक अंतराल पर आमंत्रित किया जाता है।

डॉ. एन. एस. राठौड़, उप महानिदेशक (शिक्षा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्

डॉ. एडविन सर्दन
एमेरिटस प्रोफेसर, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड

बाह्य रूप से वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	प्रधान अन्वेषक	निधिकरण एजेंसी	अवधि	कुल अनुदान स्वीकृत (लाख)
1	मार्केट इंटेलिजेंस पर एनआईएपी नेटवर्क परियोजना	डॉ. राजेश शर्मा	राष्ट्रीय नवाचार कृषि परियोजना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली	5 वर्ष (2013–17)	35.94
2	राजस्थान में पर्यावरणीय पर्यटन का महत्त्व	डॉ. राजेश शर्मा	नाबार्ड, जयपुर	1 वर्ष (2016–17)	5.725
3	उत्तरी भारत में पेशेवर कृषि मानव संसाधन की मांग एवं आपूर्ति का विश्लेषण	डॉ. अदिति माथुर	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली	1 वर्ष (2016)	22.50
4	कृषि व्यवसाय शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए भविष्य की आवश्यकताएं	श्री विवेक व्यास	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली	1 वर्ष (2016)	5.50
5	कृषिआईक्यू: डिजिटल डिसेमिनेशन ऑफ एग्रीकल्चर प्रैक्टिसेस ऑफ क्लस्टर बीन एण्ड ग्राम इन हाइपर एरिड पारसियली इरिगेटेड वेस्टर्न प्लेन जोन ऑफ राजस्थान	डॉ. अमिता शर्मा	राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, राजस्थान सरकार	3 वर्ष (2016–19)	58.06
6	मार्केट एनालाईसिस ऑफ पैक्ड टेन्डर कोकोनट वाटर इन इण्डिया	डॉ. अदिति माथुर	नारियल विकास बोर्ड, कोच्चि	1 वर्ष (2018)	5.00
7	राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना – नवाचार अनुदान	डॉ. एन. के. शर्मा	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली	4 वर्ष (2017–18 से 2020–21)	499.60

फैकल्टी डेवलपमेंट के लिए आयोजित शीत सत्र

क्र.सं.	शीत सत्र का शीर्षक	अवधि	लाभान्वित संकाय
1	जलवायु परिवर्तन परिदृश्य के अंतर्गत सतत् पशुधन उत्पादन हेतु चारा प्रबंधन रणनीति	सितम्बर 02–22, 2018	18
2	अर्न्तनिहित एवं उद्यमी कौशल द्वारा कृषि विज्ञान का विकास	नवम्बर 13– दिसम्बर 03, 2018	20

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान का अध्ययन बोर्ड

संस्थान के शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की समीक्षा और उन्नयन के लिए संस्थान का अध्ययन बोर्ड है। अनुमोदन और कार्यान्वयन के लिए विश्वविद्यालय के विद्या परिषद में अध्ययन बोर्ड की सिफारिशों पर आगे चर्चा की जाती है। संस्थान के निदेशक संकाय के पदेन अध्यक्ष होते हैं। अध्ययन बोर्ड के विशेषज्ञों के पैनल का कार्यकाल दो वर्ष का होता है।

संस्थान के अध्ययन बोर्ड की संरचना (जुलाई 1998 से जून 2020)

नाम	पदनाम	संबंधित संस्था
डॉ. एन.के. शर्मा	निदेशक एवं अध्यक्ष, कृषि व्यवसाय प्रबंधन संकाय	कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
कुलपति द्वारा नामित सदस्य		
डॉ. पी. एल. सरोज	निदेशक	केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर
डॉ. अविनाश वानम	सहायक निदेशक (फसल)	कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
डॉ. सुनीता महला	प्रोफेसर (कृषि व्यवसाय प्रबन्धन)	चौधरी चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
डॉ. एन.आर. पंवार	प्रधान वैज्ञानिक	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
डॉ. शुचि माथुर	सहायक निदेशक	चौधरी चरण सिंह– राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान, जयपुर
उद्योग जगत के प्रतिनिधि		
श्री अरविंद ओझा	सचिव	उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर
श्री कमल कुमार	उप महाप्रबन्धक, धानुका एग्रीटेक लिमिटेड	धानुका एग्रीटेक लिमिटेड, दिल्ली
विश्वविद्यालय की अन्य घटक इकाइयों के प्रतिनिधि		
डॉ. विमला डुंकवाल	अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर अध्ययन	अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर अध्ययन, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
डॉ. आई. पी. सिंह	अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष	कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
डॉ. दिपाली धवन	अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष	गृहविज्ञान महाविद्यालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
संस्थान के आमंत्रित संकाय सदस्य		
डॉ. अदिति माथुर	सहायक प्रोफ़ेसर (मानव संसाधन विकास)	कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
डॉ. एस. एस. मीणा	सहायक प्रोफ़ेसर (वित्त)	कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
डॉ. अमिता शर्मा	सहायक प्रोफ़ेसर (परिणात्मक प्रबन्धन तकनीकें)	कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
श्री विवेक व्यास	सहायक प्रोफ़ेसर (विपणन)	कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
डॉ. विक्रम योगी	सहायक प्रोफ़ेसर (कृषि अर्थशास्त्र)	कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

विश्वविद्यालय कुल गीत

धोरों की धरती पर स्वप्निल हरियाली बिछ आई है
मरूधर की काशी पर हमने इक नव पौध लगाई है
सन्त केशवानन्द के आदर्शों को हृदय बसाया है
सृजन बीज बोकर हमने, धरती का कर्ज चुकाया है
हमारा केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय

रेतीले धोरों से हमने गुण अंबार निकाले हैं
कल के सूखे रेत के टीबे, अब दिखते हरियाले हैं
संवर्धित की हमने किस्में, मोठ, बाजरा, ग्वार की
बेर खेजड़ी मूंगफली और किन्नू संग अनार को
जौ, कपास और चना गेहूँ का, उत्पादन बढ़ पाया है
सृजन बीज बोकर हमने, धरती का कर्ज चुकाया है
हमारा केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय

आधुनिक के साथ पुरातन, प्रकृति के हम सैनिक हैं
कृषि कार्य के यंत्र बनाने की तकनीक भी मौलिक हैं
ऊँट, भेड़, मधुमक्खी, मछली, गाय, भैंस का पालन हो
उन्नत हो तकनीक हमारी, सुगम कृषक का जीवन हो
नवाचार का हुनर किसानों को हमने सिखलाया है
सृजन बीज बोकर हमने, धरती का कर्ज चुकाया है
हमारा केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय

इन्दिरा भाखड़ा गंग के जल से, शस्य श्यामला हुई धरा
केशव की शिक्षा ज्योत से जन-मन में आलोक भरा
कृषि प्रबन्धन श्रेष्ठ किया और शोध ज्ञान का हुआ प्रसार
जैविक खेती, नारी शिक्षा ने भी तो पाया विस्तार
सेवा और स्वावलम्बन का नव इतिहास रचाया है
सृजन बीज बोकर हमने धरती का कर्ज चुकाया है
हमारा केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय

कृषि व्यवसाय प्रबन्धन संस्थान का औद्योगिक इकाईयों के साथ सम्बन्ध